गौरक्षक गुंडों को अब मिलेगा सरकारी आई कार्ड

प्रधानमंत्री मोदी कह रहे हैं कुछ, लेकिन हरियाणा का खट्टर और भानीराम मंगला चला रहे है संघ का एजेंडा

-वाई. के. रज्जन

देशभर में गाय के नाम पर मची गुंडागर्दी के बाद देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बयान दिया कि गाय की रक्षा के नाम पर नौटंकी करने वाले 80 फीसदी गौ रक्षक फर्जी हैं। ये लोग रात में काले धंधे करते हैं और दिन में गाय के नाम पर नौटंकी करते हैं। देश भर में आरएसएस के इशारे पर गौरक्षकों ने मोदी के बयान का विरोध शुरू कर दिया। ...लेकिन हरियाणा में तो गजब ही हो गया। हरियाणा में जिस मनोहर लाल खट्टर को मोदी ने पैराशूट से मुख्यमंत्री बनाकर हरियाणा में उतारा, उनकी सरकार ने ऐलान किया कि हरियाणा में गौरक्षकों को आई कार्ड दिए जाएंगे। जिससे पुलिस और अधिकारियों के साथ उनको डील करने में कोई समस्या न आए। खट्टर ने ये ऐलान खुद न करके गौ रक्षा आयोग के चेयरमैन भानीराम मंगला से कराया। मंगला ने कहा कि विभिन्न गौ रक्षा दलों से जो आवेदन प्राप्त होंगे, उनमें से ही गौरक्षकों को पहचान पत्र जारी किए जाएंगे। उसने ये भी कहा कि फर्जी गौरक्षकों की नकेल कसने के लिए ही पहचान पत्र दिए जाएंगे। गौ रक्षकों का काम होगा, पुलिस को गो वंश की तस्करी की सूचना देना। बाकी काम पुलिस करेगी।....इस घोषणा के बाद महेंद्रगढ़ में कनीना रोड पर अगले ही दिन पुलिस ने एक वाहन का पीछा कर एक कथित गौ तस्कर को मार गिराने का दावा किया। महेंद्रगढ़ पुलिस ने कहा कि हमने शक होने पर एक वाहन का पीछा किया, जब नजदीक पहुंचे तो उस गाड़ी से हम पर फायरिंग की गई। जवाब में हमने भी फायरिंग की। बाकी गौ तस्कर भाग गए लेकिन एक मारा गया। उस गाड़ी से कितनी गाय बरामद की गई, इसका खुलासा पुलिस ने नहीं किया। इस तरह निचोड़ ये निकलता है कि हरियाणा में गाय के नाम पर गुंडागर्दी जारी रहेगी, देश का प्रधानमंत्री चाहे जो कहता रहा। यानी आरएसएस अपने संगठनों के माध्यम से प्रधानमंत्री को कठपुतली बनाकर रखना चाहता है। प्रधानमंत्री के फर्जी गौभक्त वाले बयान के बाद आरएसएस ने प्रत्यक्ष रूप से उसका समर्थन किया लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से अपने संगठनों से मोदी के विरोध में बयान दिलवाकर और हरियाणा सरकार से घोषणा करवाकर ये संकेत दे दिया कि गाय के नाम पर गुंडागर्दी का अब बाकायदा लाइसेंस दिया जाएगा। ऐसा ऐलान अकेले हरियाणा ने नहीं किया। गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, झारखंड समेत तमाम बीजेपी शासित राज्यों से ऐसे बयान आए कि गाय की रक्षा हर हालत में की जाएगी।

भानीराम मंगला के तुगलकी तेवर

मजूदर मोर्चा के पिछले अंक में हमने जिक्र किया था कि इस शख्स ने हरियाणा सरकार को एक तुगलकी प्रस्ताव पारित कर कहा है कि गाय की रक्षा के लिए विभिन्न चीजों पर सेस या टैक्स लगाया जाना चाहिए। उसके सुझाव में सरकारी ट्रस्टों के मंदिरों में आने वाले चंदे का 50 फीसदी गौ सेवा के लिए दान, विवाह स्थल में होने वाले शादी समारोह में गौ सेवा के लिए 2100 रुपए की दानराशि, सिनेमा टिकटों पर पहले से लगने वाले 20 प्रतिशत टैक्स को और 5 प्रतिशत बढ़ाने, राज्य मंडियों में आने वाले चावल, गेहूं और दूसरी फसल के हर बोरे पर 1 रुपये सेस लगाना शामिल है। हरियाणा सरकार के कुछ समझदार अफसरों ने इस प्रस्ताव को पास होने से फिलहाल रुकवा दिया है लेकिन कृषि मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ इस कोशिश में है कि इसे कैबिनेट में लाकर इसे पास कर दिया जाए। लेकिन अफसरों के आगे अभी तुगलकी चेयरमैन और मंत्री की नहीं चल रही है।

खतरनाक इरादे

मोदी के भाषण के बाद गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों को एक एडवाइजरी (सलाह) जारी की है, जिसमें कहा गया है कि गाय की रक्षा के नाम पर कुछ लोग समाज में अराजकता फैला सकते हैं, इसलिए पुलिस को बहुत सावधान रहने की जरूरत है।हरियाणा में गौ रक्षा दल हरियाणा दयानंद मठ रोहतक का उदाहरण देना काफी होगा। इस संगठन का लिंक है http://www.gaurakshadalharyana.org/ अगर आप इस साइट पर जाएंगे तो जिस पहले वाक्य पर आपकी नजर जाएगी, लिखा है 'हम अपनी लाशों से गौमाता के गुलशन को आबाद रखेंगे, वो लड़ाई होगी कि गौमाता के दुश्मन भी याद रहेंगे।' इस संगठन ने फरीदाबाद, पलवल, गुड़गांव, मेवात समेत पूरे हरियाणा में टीमें बना रखी हैं जिनका काम गाय की रक्षा है।

कहा जा रहा है कि पिछले दिनों फरीदाबाद में जिन दो युवकों को गाय तस्करी के कथित आरोप में गाय का गोबर खिलाया गया और जिस तरह मेवात समेत पूरे दक्षिण हरियाणा में कथित गौ तस्करों के एनकाउंटर हो रहे हैं या उन्हें पकड़ा जा रहा है, उसमें इसी संगठन के लोगों का हाथ है। इनकी वेबसाइट पर हर जिले की टीम सदस्यों के नाम और मोबाइल नंबर लिखे हुए हैं। इस संगठन पर लिखी पहली लाइन पर अगर कोई ध्यान देगा तो पता चलेगा कि इसमें लड़ाई करने की बात कही गई है यानी अगर कोई गैर हिंदू गाय ले जाता हुआ पकड़ा गया तो वो गाय तस्कर माना जाएगा और इस संगठन के कार्यकर्ता उससे भिड़ जाएंगे। चाहे उसके लिए उन्हें अपनी जान क्यों न देनी पड़े। लेकिन अभी तक जो खबरें आ रही हैं, उसके मुताबिक मेवात, फरीदाबाद, गुड़गांव में ज्यादातर गौ तस्कर ही मारे जा रहे हैं। किसी गौभक्त की हत्या की खबर सुनने को नहीं मिली।

पिछले दिनों गुड़गांव में हुए गौ रक्षा सम्मेलन में भानीराम मंगला के अलावा गाय रक्षा टास्क फोर्स की कमिश्नर भारती अरोड़ा को भी अतिथि के तौर पर बुलाया गया था। इस टास्क फोर्स का दफ्तर गुड़गांव के भोंडसी में बनाया गया है, जो मेवात से एकदम सटा हुआ है। पहली बात तो ये है कि सरकारी अधिकारी को ऐसे कार्यक्रम में आना नहीं चाहिए, जहां उत्तेजक भाषणबाजी का खतरा हो। इस सम्मेलन में भानीराम ने बढ़चढ़ कर बयान दिया और कहा कि गौरक्षक पुलिस की मदद से गौ तस्करों को ऐसा मजा चखाएंगे कि वो याद रखेंगे। भारती अरोड़ा ने कहा कि गौ रक्षकों के साथ मिलकर हम लोग एक टीम की तरह काम करेंगे।

गाय की रक्षा के नाम पर

पूरे देश में गौ हत्या रोकने के लिए सबसे सख्त कानून हरियाणा में है। इसके तहत गौ हत्या करने वालों को 10 साल की सजा, 1 लाख रुपये तक जुर्माना, जुर्माना न भरने पर सजा एक साल तक और बढ़ाने का प्रावधान। गौ तस्करी करने, गौमांस खाने तथा रखने वाले को 3 से 7 साल तक की सजा तथा 30 हज़ार से 70 हज़ार रुपये तक जुर्माने तथा जुर्माना न भरने पर यह सजा एक साल तक और बढ़ाने का प्रावधान है।

गाय की आड़ में खजाने की लूट

गाय की आड़ में सरकार ने अपने समर्थकों को जनता के पैसे की लूट का इंतजाम भी कर रखा है। ऐसे किसान कर्ज लेने के लिए सरकारी बैंकों के चक्कर लगाता है तो उसे कर्ज नहीं मिलता। जिन्हें कर्ज मिलता है, उन्हें आत्महत्या करनी पड़ती है लेकिन हरियाणा में गाय के नाम पर सरकार लोन देने को तैयार है। ये लोन उनके अपने एनजीओ से लेकर फर्जी गाय रक्षक बाबाओं को मिलेंगे। हरियाणा सरकार ने दो साल से ये आंकड़ा जारी नहीं किया है कि आखिर कितने गौ पालकों को उसने लोन दिया। बता दें कि हरियाणा में 5 गाय पालने वाले गौ-पालकों को 50 प्रतिशत तक तथा 5 से ज्यादा गाय पालने वाले को 25 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाती है। कुल मिलाकर पूरा हरियाणा इस समय गाय के धंधे में जुटा हुआ है।

कश्मीर: क्यों टकरा रहे हैं बेबस पत्थर बंदूकों से

-हिमांशु कुमार

महाराजा हरि सिंह की सेना और आरएसएस के गुंडों ने जम्मू में आजादी के समय ढाई लाख मुसलमानों का कत्ल किया था।.

जम्मू की आबादी में इस कत्लेआम की वजह से ही मुस्लिम अल्पसंख्या में आ गये। जम्मू से जान बचा कर भागे मुसलमानों की बातों से जोश में आकर कबाइलियों नें पलट कर हमला किया।

.कबाइलियों के साथ पकिस्तान की फौज भी आयी थी। अगर अपके देश की सीमा पर इतना बड़ा कत्ले आम हो तो पड़ोसी मुल्क अक्सर वहाँ हस्तक्षेप करते हैं। जैसे पकिस्तान ने पूर्वी पकिस्तान में कत्लेआम किया तो इंदिरा गांधी ने जनता का साथ देने के लिए अपनी सेना भेजी थी और भारतीय सेना ने पकिस्तान के दो टुकड़े कर के एक नया देश बंगलादेश बनवा दिया। कश्मीर में कबाइलियों और पाकिस्तानी फौज के हस्तक्षेप के बाद भारत की सेना ने कार्यवाही की। कुछ ही दिनों में संयुक्त राष्ट्र संघ ने बीच में आकर युद्ध विराम करवा दिया। अगर भारत अपनी सेना को उसी समय एलओसी पर नहीं रोकता तो भारतीय सेना को संयुक्त राष्ट्र संघ की सेनाओं से युद्ध करना पड़ता।. हरि सिंह ने मजबूर होकर एक्सेशन पेपर पर दस्तखत किये और शर्त यह तय हुई कि भारत कश्मीर से अपनी सेना वापस बुलाएगा, पकिस्तान अपने कंट्रोल वाले हिस्से से अपनी सेना वापस बुलाएगा, इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ की देखरेख में निष्पक्ष माहौल में कश्मीरी जनता की राय ली जायेगी।. इस वादे को किये हमें 69 साल बीत चुके हैं। आप कितना भी शोर मचाते रहें कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। तथ्य यह है कि कश्मीर एक विवादित क्षेत्र है। आज भी कश्मीर में संयुक्त राष्ट्र का आफिस है। कश्मीर में भारत आईपीसी (इन्डियन पिनल कोड) नहीं बल्कि रणबीर पिनल कोड चलता है। वहां का अपना अलग राष्ट्रीय झंडा भी है। शुरू में वहां मुख्यमंत्री की जगह प्रधानमंत्री होता था, वहां जाने के लिये भारतीयों को स्पेशल परमिट लेना होता था। कश्मीर का अपना एक झंडा है। कश्मीर की जनता जब भी भारत से बात करना चाहती है उसे बातचीत के बदले मिलता है सेना का आतंक। आवाज उठाने वालों के साथ मारपीट, बलात्कार, हत्याएं, गायब कर देना। कश्मीर में हजारों औरतों को हाफ विडो यानी आधी विधवा कहा जाता है। यानी उसे पता ही नहीं है कि उसका पति जिंदा है या मर चुका है। दर्दपुरा गाँव में इतने मर्दों का कत्ल हुआ और औरतों के साथ बलात्कार हुआ कि अब वहाँ की लड़कियों की शादी नहीं होती। एक दूसरे गाँव पोशपोरा में 54 औरतों के साथ सैनिकों नें सामूहिक बलात्कार किये। दर्दपुरा की औरतें सैनिको के लिए जिस्म बेच कर जिंदा हैं। आपके ऊपर अगर कोई इतना दमन और आपकी इतनी बेइज्जती करे और आप से कोई बात करने को तैयार न हो ? तो आपका अपना वजूद खुद पूछेगा कि नहीं कि मैं जिंदा हूँ क्या और तुम्हारी तरह इंसान हूँ ये साबित करने के लिए बताओ मैं क्या करूं ? कश्मीरी पत्थर उसी बेबसी से निकल कर आप की भेजी गयी बन्दूकों से टकरा रहे हैं। आप भी इंसान हैं, कभी कश्मीरी लोगों की तकलीफें सुनने के लिए आपकी कोई संस्था संगठन नागरिक समूह क्यों नहीं गया ? टपकते पानी से जमी हुई बर्फ का पिंड देखने के लिए आपके पास समय और पैसा है। लेकिन अपने ही लोगों के टपकते खून की बूँदें देखने के लिए आपके पास न समय है ना इंसानियत बची है। आप हिन्दू या मुसलमान में बंटे हैं। इंसानियत क्या होती है उसका पता शायद आपको किसी ने बताया ही नहीं। आप सोचते हैं आपकी दी हुई तनख्वाह से घर पालने वाले गरीब सैनिक शांति ले आएंगे ? तो आप गफलत में हैं। याद राखिये जहां जुल्म है वहाँ शांति कभी नहीं होती। शांति सिर्फ न्याय से निकलती है। यकीन न हो तो एक बार आसमा के देख लो।

कांवड़ यात्रा

सत्रह वर्ष का मनोज पहली बार दोस्तों के साथ कांवड़ लेकर चला। घर से निकलते समय माँ ने उसके पैर धोये। बहनों ने आरती उतारी और पिता ने कुछ न कहते हुए उसके बटुवे में दो हजार के नोट और डाले और हिदायत दिया कि थक जाने पर कोई गाड़ी पकड़ लेना।

यूँ तो मनोज कोई इतना आस्तिक और जागरूक नहीं था कि कांवड़ यात्रा के आध्यात्मिक प्रभाव को आत्मसात कर पाता लेकिन प्रति वर्ष अपनी उम्र से बालिश्त भर ज्यादा के लौंडों की बदमाशी भरी कहानियों और रास्ते के रोमांच ने उसे भी इस यात्रा पर जाने के लिए प्रोत्साहित किया। यह लगभग बीस युवकों का समूह था जो मिनी लारी पर लदे बड़े बड़े डीजे के साउंड बॉक्स पर पैरोडी गीतों की धमक से सड़क के बुजुर्गों का कलेजा दहलाते अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे थे।

हर हर बम बम की धीमी आवाजें अचानक तेज हो जातीं जब कालेज जाती लड़कियों का कोई समूह सड़क पर दिख जाता। किशोर मनोज को यह और भी रोमांचित करता। अक्सर तो होता यह कि लडकियां खुद ही उनकी साइड छोड़ देतीं लेकिन कभी अगर ऐसा नहीं हुआ तो चलते चलते हाथ कमर कंधे छूने की होड़ सी लग जाती सभी लौंडों में और बाद में सफल हुए लड़के बाकियों पर अपनी इस भक्ति का रौब भी झाड़ते।

एक बार जब समूह ने निश्चय किया कि अगले पड़ाव तक वे अपनी यात्रा बस से करेंगे तो सभी ने मिलकर जबरन एक सरकारी बस रोक लिया। हर हर बम बम करते हुए वे पहले से ही भरी हुई बस में चढ़ गए। बस बीस अतिरिक्त सवारियों को लेकर काँखते कराहते आगे बढ़ी। टिकट मांगने को लेकर कंडक्टर से गाली गलौज करने के बाद सभी युवकों ने बस में बैठी महिलाओं और लड़कियों पर अपनी भक्ति की बरसात शुरू किया।

"अबे हउ देख पियरकी दुपट्टा वाली त एकदम रानी मुखर्जी लागत"

"अरे तनी इधर भी निगहिया घुमा ला ए रानी" और भी तमाम आद्यात्मिक मन्त्रों और शारीरिक इशारों से वे सभी रूठी और क्रुद्ध देवियों को रिझाने और सताने की भरपूर कोशिश करते रहे।

बस इलाहाबाद वाराणसी हाइवे पर अपनी बेबस चाल से आगे बढ़ रही थी और सब कुछ ऐसे ही चल रहा था कि तभी हिन्दू सनातन धर्म का एक बैरी आवाज ऊंची कर बैठा। ए भाई साहब ! जरा अपना हाथ उधर कीजिये, महिला को दिक्कत हो रही है। शर्म हया है कि नहीं.....

अब क्या था, हिन्दू सभ्यता की जड़ों पर हुआ प्रहार वे अनुशासित और आध्यात्मिक युवक बर्दाश्त नहीं कर सके। शुरूआती गाली गलौज के बाद मामला हाथपाई तक पहुँच गया। महिला इन भगवाधारियों से अपनी अस्मिता और अपने परिवारीजन की मागी की गुहार लगाती रही लेकिन संख्या बल के गर्व में चूर धर्म भला इस दुष्टता के लिए उन्हें माफ़ कैसे करता। वह भी तब जब कि आधे घण्टे पहले खींचे गए चीलम ने उन्हें साक्षात शिव का गण बना दिया था।

शिव भक्तों के तांडव ने न केवल बस की यात्रा रूपी यज्ञ को भंग किया अपितु हाइवे पर जाम भी लगा दिया। पीछे से आ रहे बाकी के भक्त भी इस यज्ञ में शामिल हुए और हर किसी को जिसने भगवा कपड़ा नहीं पहना था उसे पीटना और अपमानित करना शुरू कर दिए। मनोज के हाथों में अब काँवर की जगह बांस का डंडा था और आँखों में गांजे की लाली के साथ अपने वर्चस्व का दम्भ। अचानक एक धक्के से वह स्वयं को संभाल नहीं सका और दूसरी तरफ से आ रहे ट्रक के सामने गिर पड़ा। ट्रक को उस शिव भक्त पर तनिक भी दया नहीं आई। परिणामस्वरूप मनोज बैकुंठवासी हुआ।

अगले चार घण्टों के बीच कई सरकारी बसें और गाड़ियां फूँक दी गयीं। हाइवे छत्तीस घण्टों तक जाम रहा और बाद में अर्धसैनिक बलों और प्रशासन के उच्चाधिकारियों के भरपूर प्रयत्नों से यात्रा आगे बढ़ी।

अब मनोज के घर से आजीवन कोई इस यात्रा पर नहीं जायेगा क्योंकि मनोज के बैकुंठवासी होने का आरोप शिव के माथे पर जो ठहरा।

आज भी सामान्य लोग किसी न किसी रूप में इन शिव भक्तों के आतंक से त्रस्त होते ही हैं। मैंने स्वयं इलाहाबाद से वाराणसी तक की अपनी यात्रा के दौरान अपनी महिला मित्र पर हुई फब्तियों और इशारों को झेलने की विवशता सहा को है और विरोध की स्थिति में स्वयं को बिल्कुल अकेला और बेबस पाया है। सच कहूँ तो सामान्य लोग इन उत्पाती भक्तों को कभी भी श्रद्धा के भाव से नहीं देखते लेकिन आस्था की अंधी अवधारणा ने उनके मुंह बंद कर रखे हैं। केवल शिव गण ही नहीं अगर ऐसा उत्पात साक्षात शिव भी करते तो भले ही मैं कमजोर हूँ लेकिन उनके मुंह पर थूक कर इस घृणित करतूत के प्रति अपना विरोध तो जरूर दिखाता।

अगर आप किसी यात्रा के आध्यात्मिक पहलू से अनजान होकर मात्र अपने भीतर की पशुता की संतुष्टि के लिए इसका समर्थन कर रहे हैं तो यह बेहतर है कि तमाम वास्तविक श्रद्धालुओं की भावनाओं को भी दरकिनार कर ऐसी यात्राओं का तीखा विरोध किया जाय..... क्योंकि एक सभ्य समाज को निर्दोष महिलाओं, बच्चियों , बुजुर्गों और बेबस लोगों के सम्मान और सुविधाओं का हनन किसी भी रूप में बर्दाश्त नहीं करना चाहिए।

- मलंग